IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर पर बालिका शिक्षा उन्नयन (प्रोत्साहन) हेतु संचालित योजनाओं का अध्ययन।

निर्देशिका
राजू पंसारी
रीडर

प्रस्तुतकर्त्री
सुनीता कुमारी बिजारनियाँ
एम.एड.छात्रा

सारांश –

राजस्थान में विभिन्न दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा का सार्वजनिकरण शिक्षाविदों के चिंतन का विषय बन चुका है। विभिन्न प्रकार की योजनायें बालिकाओं की प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए चलायी जा रही है। अरबों रूपये इन योजनाओं पर खर्च किए जा रहे है। इन योजनाओं की उपादेयता व लाभों को जानना आवश्यक है। ये योजनायें सफल बालिका शिक्षा के प्रसार मे सहयोग दे रही है या नहीं क्या ये अपने उद्देश्य में सफल हो पा रही हैं?

अतः इन योजनाओं की स्थिति का अध्ययन इन सरकारी प्रयासों के प्रति शिक्षकों की जानकारी का अध्ययन करने की दिशा में नवीन दृष्टि प्रदान करेगा। इस विष्वास के साथ अनुसंधानकर्त्ता के उक्त समस्या का चयन किया।

प्रस्तावना –

शिक्षा मानव के आंतरिक अंधकार को मिलाकर उसके अंतर्गत को प्रकाशित करती है। उस प्रकाश से मनुष्य को एक विशेष दृष्टि मिलती है। इसी दृष्टि को जीवन की दृष्टि भी कहा जाता है। जो हमें सांसारिक सत्य से रूबरू कराती है। यह जीवन दृष्टि शिक्षा से ही संभव है।

शिक्षा मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास की वाहक है। जो किसी भी राष्ट्र व समाज के विकास की दिशा को निर्धारित करती है। परिवर्तन एक शाश्वत प्रक्रिया है। यह परिस्थितिजन्य है। जो परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होती रही है। अतः शिक्षा की युग व परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न सोपानों को पार करते हुए वर्तमान स्थिति तक पहुँची है।

कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि शिक्षा एक ऐसा उपकरण है जो भारत के सामाजिक, आर्थिक कल्याण में परिवर्तन ला सकती है।

बालिका शिक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार ने समय – समय पर कई शैक्षिक अभियान चलाये है। उन्हीं में से शोध कार्य हेतु सर्व शिक्षा अभियान, मिड डे मील व कस्तूरबा गाँधी बालिका आवासीय योजना के प्रति शिक्षकों की जानकारी के अध्ययन के लिये चुना गया है।

बालिका शिक्षा – भारत सरकार द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु 2003–04 में प्रारंभिक स्तर पर राष्ट्रीय बालिका शिक्षा कार्यक्रम (NPEGEL) का गठन किया गया। यह कार्यक्रम कक्षा 1 से 8 तक के अंतर्गत आने वाली पिछड़ी, साधनहीन, शालात्यागी विद्यालय न जाने वाली तथा कामकाजी विद्यालय न जाने वाली तथा कामकाजी बालिकाओं के लिए चलाया जा रही है। कार्यक्रम का उद्देश्य बालिकाओं की विद्यालय तक पहुँच और प्रतिभागिता बढ़ाने के लिए सुविधाओं को विकसित और विस्तारित करने बालिकाओं का सबलीकरण सुनिश्चित करने एवं विभिन्न हस्तक्षेपों के द्वारा शिक्षा की गुणवता में सुधार लाने से है।

कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय – कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय योजना भारत सरकार वर्ष 2003–2004 में बनायी गयी और जुलाई 2004 में इस योजना को 24 राज्यों में लागू किया गया प्रारंभ में इस योजना को राष्ट्रीय बालिका प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (NPEGEL) महिला समख्या तथा सर्व शिक्षा अभियान के सम्मिलित प्रयासों के साथ संचालित किया गया। लेकिन 1 अप्रेल 2007 को इसे सर्व शिक्षा अभियान के साथ संलग्न कर अलग योजना के रूप में 26 राज्यों में संचालित किया गया। इस योजना का लक्ष्य समूह अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग व अल्प संख्यक वर्ग के साथ–साथ गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाली बालिकायें है। वर्तमान में इस योजना में विस्तार करते हुए 1 अप्रैल 2008 से उन ग्रामीण विकास खेड़ी में कस्तूरबा गांधी विद्यालयों को खोला जाने का प्रावधान रखा गया है।

समस्या का औचित्य –

प्राथमिक शिक्षा के मामले में पूरा देश पिछड़ा हुआ है। जनसंख्या वृद्धि के साथ–साथ यह समस्या और विकराल होती जा रही है।

हमारे देश में 1951 में महिलाओं में साक्षरता की दर 8.86% थी जो कि 1991 में बढ़कर 39.19% हो गयी। यह संतोष–जनक नहीं है। वर्तमान में भी देश की अधिकांश बालिकायें अभी भी शिक्षा से वंचित रह जाती है। जिसका प्रभाव देश के विकास को अवरूद्ध करता है। इस स्थिति को दूर करने के लिए यह परम आवश्यक है कि बालिकाओं की प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शिक्षा के प्रोत्साहन पर सर्वाधिक बल दिया जाये।

राजस्थान में विभिन्न दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा का सार्वजनिकरण शिक्षाविदों के चिंतन का विषय बन चुका है। विभिन्न प्रकार की योजनायें बालिकाओं की प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए चलायी जा रही है। अरबों रूपये इन योजनाओं पर खर्च किए जा रहे है। इन योजनाओं की उपादेयता व लाभों को जानना आवश्यक है। ये योजनायें सफल बालिका शिक्षा के प्रसार मे सहयोग दे रही है या नहीं क्या ये अपने उद्देश्य में सफल हो पा रही हैं?

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

1. **उच्च प्राथमिक विद्यालय** – उच्च माध्यमिक विद्यालय के अंतर्गत 6 से 12 तक की विद्यालयी शिक्षा को सम्मिलित किया जाता है।

2. **बालिका शिक्षा प्रोत्साहन** – बालिकाओं में शिक्षा के प्रति जानकारी पैदा करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना तथा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहन प्रदान करने हेतु अनेक प्रकार के प्रयास इसके अंतर्गत आते है।

3. **सरकारी योजना** – सरकारी योजना से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाएँ व प्रयासों से है शोध के अंतर्गत इसका संबंध बालिका शिक्षा से संबंधित है।

शोध के उद्देश्य –

1. वर्तमान में बालिका शिक्षा का अध्ययन करना।
2. बालिका शिक्षा के उन्नयन (प्रोत्साहन) हेतु संचालित योजनाओं का अध्ययन करना।
3. बालिका शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी समाज के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. शहरी एवं ग्रामीण बालिकाओं पर योजनाओं से नामांकन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध की विधि –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श के रूप में उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय की 60 शिक्षकों का चयन किया जाएगा।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकी के रूप में निम्न का प्रयोग किया गया है –

1. प्रतिशत

शोध का परीसीमांकन –

1. प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र तक सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य में जयपुर जिले के शहरी क्षेत्र के दो सरकारी एवं दो गैर सरकारी विद्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्र के दो राजकीय व दो निजी विद्यालयों तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य जयपुर जिले के शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण –

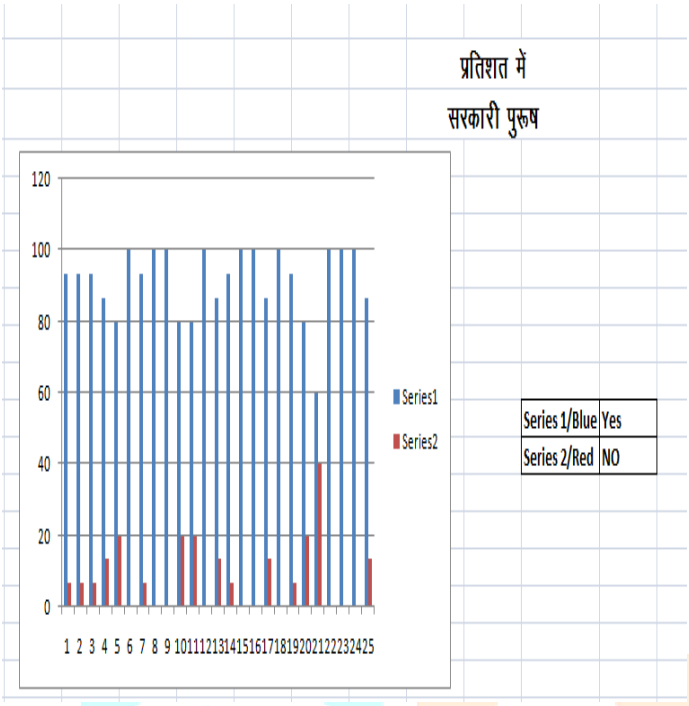

परिणामस्वरूप यह कहा जाता है कि माध्यमिक स्तर के सरकारी स्कुल के अध्यापकों में ग्रामीण स्कूल के अध्यापकों की अधिक पायी जाती है।

शोध निष्कर्ष –

सरकारी विद्यालयों के कुल 91.47% पुरूष शिक्षकों ने सहमति तथा 8.53% ने असहमति व्यक्त की है। जबकि गैर सरकारी विद्यालयों के कुल 83.47% पुरूष शिक्षकों ने सहमति तथा 16.53% ने असहमति व्यक्त की है। इसी प्रकार सरकारी विद्यालयों की कुल 92.53% महिला शिक्षकों ने सहमति तथा 7. 47% महिला शिक्षकों ने असहमति व्यक्त की है जबकि गैर सरकारी विद्यालयों की कुल 82.67% महिला शिक्षकों ने सहमति तथा 17.33% महिला शिक्षकों ने असहमति व्यकत की है।

सुझाव –

1. प्रस्तुत शोध कार्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु सरकारी योजनाओं की जागरूकता का अध्ययन करने के लिए किया गया है। जबकि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में भी सरकारी प्रयासों की जागरूकता का अध्ययन करने के लिए शोधकार्य किया जा सकता है।

2. प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श जयपुर शहर तक सीमित रखा गया है। जयपुर जिले व राज्य के अन्य जिलों की सरकारी प्रयासों की जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।

3. प्रस्तुत शोधकार्य केवल उच्च प्राथमिक स्तर पर सरकारी प्रयासों का अध्ययन किया गया है। अन्य स्तरों पर जैसे – प्राथमिक, माध्यमिक स्तर पर की अध्ययन किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत शोध कार्य को न्यादर्श के रूप 60 शिक्षकों तक सीमित रखा गया है। अतः एक बड़े न्यादर्श को लेकर भी यह अध्ययन किया जा सकता है।

5. प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में शिक्षकों के स्थान पर विद्यार्थियों तथा प्रधानाचार्यो को भी लिया जा सकता है।

6. प्राथमिक स्तर की बालिकाओं की विशिष्ट समस्याओं व सुझावों का अध्ययन किया जाता सकता है।

7. उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का बालिका शिक्षा प्रोत्साहन हेतु सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं के प्रति जागरूकता का अध्ययन के स्थानपर अभिवृत्ति का अध्ययन भी किया जा सकता है।

8. प्रस्तुत शोधकार्य का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- अग्रवाल, जे.सी. (1995). भारत में प्राथमिक शिक्षा. नई दिल्ली : विद्या विहार।
- अग्रवाल, जे.सी. (2001). भारत में नारी शिक्षा. नई दिल्ली : विद्या विहार।
- अग्निहोत्री, रविन्द्र; ओड़, एल. के. (1980). भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- अग्निहोत्री, रवीन्द्र (1989). भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ. मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन्स।
- भटनागर, आर.पी. (1962). शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी प्रयोग. मुरादाबाद : नेशनल बुक डिपो।